

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 13, चमकने की अपील, फिलिप्पियों 2:12-30

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 13 है, अपील टू शाइन, फिलिप्पियों 2:12-30।

जेल पत्रों पर हमारे बाइबिल अध्ययन व्याख्यान में आपका स्वागत है।

मुझे उम्मीद है कि अब तक फिलिप्पियों पर हमारे साथ अध्ययन करते हुए आपको अच्छा लगा होगा। हमने फिलिप्पियों की शुरुआत देखी। अगर आपको याद हो तो मैंने एक प्रतियोगिता रखी थी, इस तथ्य के साथ कि फिलिप्पियों को पहली सदी में फिलिप्पी नामक शहर के लिए लिखा गया था।

यह शहर, हालांकि मूल रूप से ग्रीक था, रोमन उपनिवेश बन गया था। मैंने आपको धार्मिक माहौल और राजनीतिक माहौल के बारे में कुछ संकेत दिए थे। मैंने आपको बताया था, अगर आपको याद हो, तो, वास्तव में, इस विशेष शहर के नागरिकों के पास किसी न किसी तरह की दोहरी राष्ट्रीयता होगी।

उदाहरण के लिए, यदि आप ग्रीक में जन्मे हैं, तो रोमन उपनिवेश होने के कारण आपको रोमन नागरिकता प्राप्त होती है। पॉल फिलिप्पियों में अपनी बातचीत को आकार देने के लिए अपने बयानबाजी के ढांचे के एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में इसका उपयोग करेंगे। मैंने आपको पॉल के महान गुण के बारे में याद दिलाया, जो यह है कि हम अक्सर इस तथ्य को भूल जाते हैं कि पॉल अपने पत्रों की शुरुआत प्रार्थना से करते हैं।

वह लोगों और चर्च के बारे में अपने विचारों के लिए भगवान को धन्यवाद व्यक्त करेंगे, जिनकी उन्हें बहुत परवाह है। पॉल के ये गुण, जैसे ही वह फिलिप्पियों में प्रवेश करते हैं, यदि आपको याद हो, विशेष रूप से फिलिप्पियों पर पिछले दो व्याख्यानों में, मैंने आपको दिखाना शुरू किया कि कैसे पॉल इस बातचीत को आगे बढ़ाएंगे, कुछ स्पष्ट बातें बताएंगे जिन्हें चर्च को जानना चाहिए, और इस चर्च के बारे में अपनी खुशी और उत्साह व्यक्त करेंगे, और फिर वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तंत्र, बयानबाजी तंत्र स्थापित करेंगे, जिसका उपयोग पॉल फिलिप्पियों में करते हैं, यदि आपको याद हो, तो मैंने आपको कुछ बहुत बड़ा शब्द दिया था, लेकिन उस बड़े शब्द को समझने की कोशिश करने के लिए, उदाहरण के तौर पर या समाज में महत्वपूर्ण लोगों या सम्मानित व्यक्तियों का उदाहरण देकर सबक सीखने के लिए ऐसे लोगों के रूप में जो अनुकरण के योग्य हैं। उन्होंने हमारे पिछले व्याख्यान में कहा, मसीह के दृष्टिकोण, मसीह की मानसिकता और मसीह की फ्रोनेसिस को अपने अंदर भी आने दें।

दूसरे शब्दों में, मसीह का उदाहरण लें और उसे अपना बना लें। तब से, हमें यह अद्भुत अंश मिलता है। मुझे लगता है कि मैंने शायद आपको यह याद दिलाने की कोशिश करके आपका शो

खराब कर दिया कि हमारे पास इस तथ्य का समर्थन करने के लिए इतने सबूत नहीं हैं कि यह एक भजन है जो प्रसारित हो रहा है। लेकिन बस एक मिनट के लिए इसे भूल जाइए।

यह एक ऐसा अद्भुत अंश है जो हमें बताता है कि कैसे मसीह, जो वह है, ईश्वर, आज्ञाकारिता में, मानव का रूप धारण किया, अवतार में हमारे स्तर पर आया, हमारी ओर से कष्ट सहा, और कैसे, अवज्ञा में, ईश्वर ने उसे सभी से ऊपर उठाया और उसे वह नाम, प्रतिष्ठा, अधिकार दिया जो हर दूसरे नाम से ऊपर है, कि यीशु मसीह के नाम पर, हर घुटने को झुकना चाहिए और हर जीभ को यह स्वीकार करना चाहिए कि यीशु प्रभु है। यह उस अंश का तत्काल संदर्भ है जिसे हम देखते हैं जिसे मैं अपील टू शाइन कहता हूँ। मसीह की आज्ञाकारिता और विनम्रता चर्च के लिए आदर्श बन गई है।

इसके अलावा, फिलिप्पियों 2 की आयत 12 से, पौलुस यह स्थापित करने के लिए आगे बढ़ेगा कि, वास्तव में, मसीह की आज्ञाकारिता को आज्ञाकारिता के लिए एक मौलिक आह्वान के लिए मंच तैयार करना चाहिए। और यहीं से हम अब देखना शुरू करते हैं, और मैं पढ़ता हूँ, इसलिए, मेरे प्रिय, जैसा कि तुमने हमेशा आज्ञा का पालन किया है, वैसे ही अब न केवल मेरी उपस्थिति में बल्कि मेरी अनुपस्थिति में भी, डरते और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करो, क्योंकि यह परमेश्वर है जो अपनी इच्छा के अनुसार तुम्हारे भीतर इच्छा और काम करने का कार्य करता है।

सब कुछ बिना किसी शिकायत या विवाद के करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले बनो, परमेश्वर की सन्तान, निष्कलंक, टेढ़े और भ्रष्ट लोगों के बीच में, जिनके बीच तुम जगत में ज्योतियों की नाई चमकते हो, और जीवन के वचन को थामे रहो, ताकि मसीह के दिन मैं गर्व कर सकूँ कि मैंने व्यर्थ में दौड़ या परिश्रम नहीं किया, चाहे मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान पर अर्घ्य के रूप में उंडेला जाए, मैं तुम सब के साथ आनन्दित और आनन्दित हूँ। इसी तरह, तुम्हें भी मेरे साथ आनन्दित और आनन्दित होना चाहिए। तो, मैं कुछ बातों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जो मैंने आपको पिछले व्याख्यान के अंत में दिखाई थीं, जो अपील टू शाइन पर आज की चर्चा के लिए मंच तैयार करने की कोशिश कर रही थी।

यहाँ यह विशेष अंश, जिसे मैंने अभी पद 12 से 18 तक पढ़ा है, मसीह की आज्ञाकारिता को जोड़ने के लिए मंच तैयार करता है ताकि चर्च को सुसमाचार के योग्य जीवन जीने की चुनौती दी जा सके। पद 12 में मसीह की आज्ञाकारिता स्पष्ट रूप से फिर से शुरू होती है। मसीह क्रूस तक आज्ञाकारी था, इसलिए मैं आपसे आज्ञाकारी बनने का आग्रह करता हूँ। बेन विदरिंगटन, एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी के एक विद्वान, जिन्होंने हाल ही में फिलिप्पियों पर एक टिप्पणी प्रकाशित की है, वास्तव में तर्क देते हैं कि यदि आप फिलिप्पियों अध्याय 2 से पद 1 से 18 तक के सभी पैटर्न को देखते हैं, तो आपको ग्रीक अलंकारिक रूपरेखा का एक पैटर्न मिलेगा जिसे आपने शायद हाई स्कूल में सीखा होगा।

और शायद जब आपके हाई स्कूल के शिक्षक आपको बता रहे थे, तो आपने कहा, नहीं, मुझे ये सब जानने की क्या ज़रूरत है? खैर, मैं आपको इसके बारे में याद दिला रहा हूँ। विदरिंगटन का तर्क है कि अध्याय 2, श्लोक 1 से 4 में, पॉल लोकाचार को एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाग के रूप में लेता है। ग्रीक बयानबाजी का वह हिस्सा जो आपके चरित्र को बताता है और वक्ता को वह बनाता

है जो वह है, विश्वसनीयता या अखंडता के संदर्भ में, लोगों को सुनने, सुनने और वक्ता द्वारा कही गई बातों को गंभीरता से लेने का एक अनिवार्य हिस्सा है।

विदरिंगटन का तर्क है कि वास्तव में, पॉल के तर्क की संरचना में लॉगोस अध्याय 2, श्लोक 5 से 11 है, जिसे हम क्राइस्ट भजन कहते हैं, अगर आपको बातचीत याद है। ग्रीक बयानबाजी में लॉगोस, मूल, सार, चर्चा और मुख्य बिंदु है जिसे विकसित करने की आवश्यकता है। और फिर विदरिंगटन का तर्क है कि श्लोक 12 से 18 तक, जिसे हम इस बिंदु पर देख रहे हैं, आपको पाथोस का एक तत्व मिलेगा, जो भावना है।

ग्रीक बयानबाज़ या बयानबाज़ी स्कूल आपको सिखाएंगे कि अगर आप लोगों को किसी चीज़ के लिए राज़ी करना चाहते हैं, तो बयानबाज़ी के इन तीन मुख्य पहलुओं पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है। आपकी ईमानदारी, सार, भावनात्मक जुड़ाव, करुणा, भावनात्मक आयाम लोगों को यह स्वीकार करवाने में बहुत महत्वपूर्ण हैं कि आप क्या कर रहे हैं। मैं किसी भी तरह से यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि विदरिंगटन ने वह समझ लिया है जो पॉल अपनी टिप्पणी में निर्धारित रूपरेखा में करने की कोशिश कर रहे हैं।

नहीं, मुझे वास्तव में लगता है कि विदरिंगटन के पास कहने के लिए एक बात है, लेकिन हो सकता है कि वह जो हो रहा है उसे अपने हिसाब से फिट करने के लिए बहुत ज़्यादा बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर रहा हो। हालाँकि, मुख्य बात यह है कि इस विशेष अंश में, हम आयत 12 से 18 को देखते हैं, और पॉल बहुत मज़बूत अपील करता है। इस अपील में, वह भावनात्मक आकर्षण है, और मैं तर्क दूंगा कि आज्ञाकारिता का सार आवश्यक है।

मैं आपसे अपील करता हूँ, भाइयों, और मैं आपसे तीन आधारों पर अपील करता हूँ। आइए रूपरेखा देखें, और मैं उन्हें एक मिनट में खोल दूंगा। पौलुस कलीसिया से आज्ञाकारिता में चमकने की अपील करेगा और विशेष रूप से कहेगा कि उन्हें डर और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करना चाहिए।

वाह! इसका क्या मतलब है? क्या पॉल एक मिनट के लिए सुझाव दे रहा है कि उद्धार कार्यों से हो सकता है? क्या यह उसके द्वारा कही गई बात का खंडन नहीं करता है, कि उद्धार केवल अनुग्रह से होता है? उस विचार को थामे रहो—आज्ञाकारिता में चमकने की अपील करो। डर और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करो, और मैं कुछ ही मिनटों में इसे खोलकर दिखाऊंगा।

दूसरा, आचरण में चमकें। निर्दोष और मासूम बनें। पौलुस आयत 12 से 18 में यह जोरदार अपील करता है: हाँ, जब आप डर और काँपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करते हैं, तो यह बात मायने रखती है कि लोग आपको किस नज़र से देखते हैं, आप निर्दोष हैं।

आप दोषी नहीं हैं; आप उस परमेश्वर के लिए तिरस्कार की वस्तु नहीं हैं, जिसे आपने पुकारा है और जिस पर आपने विश्वास किया है। परमेश्वर को यह कहने में गर्व होना चाहिए कि, वह मेरा बच्चा है।

वह परमेश्वर के सामने निर्दोष और मासूम था। पौलुस तीसरी अपील करेगा कि उन्हें अनुकरण करके चमकना चाहिए। वह वास्तव में उन्हें चुनौती देगा कि वे उस अलंकारिक विशेषता को देखें जो मैंने अब तक फिलिप्पियों में आपको बताई है, और पौलुस उन्हें ऐसे लोगों का उपयोग करने की आवश्यकता दिखाने जा रहा है जिन्होंने इसे अच्छे उदाहरणों के रूप में किया है।

तो, आइए हम एक-एक करके इस पर गौर करना शुरू करें। पहला, आज्ञाकारिता में चमकें। डरते और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करें।

पौलुस तर्क देगा कि आज्ञाकारिता बनाए रखो। चाहे मैं तुम्हारे साथ रहूँ या तुम्हारी मौजूदगी से दूर रहूँ, आज्ञाकारिता की भावना बनाए रखो। दरअसल, पद 12 इसी तरह से शुरू होता है।

इसलिए, मेरे प्रिय, जैसा कि तुमने हमेशा कहा है, वैसा ही अब भी करो। न केवल मेरी उपस्थिति में, बल्कि मेरी अनुपस्थिति में भी। मुझे प्रभावित करने के लिए तुम्हारे साथ शारीरिक रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है।

समाज में बदलाव लाने के लिए मुझे आपके साथ शारीरिक रूप से मौजूद होने की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में, इस कुटिल, अंधेरी दुनिया में रोशनी बनने के लिए मेरी उपस्थिति की ज़रूरत नहीं है। और फिर, वह जटिल भाषा का परिचय देता है।

वाह। डर और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करो। मैं यहाँ एक बात पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

यह काम करने का एक सामुदायिक प्रयास है। हमने अक्सर सुना है, कम से कम जब मैं एक युवा ईसाई के रूप में बड़ा हो रहा था, तो यह लगभग ऐसा लगता था, ओह, पॉल ईसाई धर्म के कुछ कानूनी संस्करण को पेश कर रहा है और बस इसे हमारे गले में डालने की कोशिश कर रहा है। मैं एक पवित्र जीवन जीना चाहता था।

और फिर भी, कभी-कभी यह श्लोक मुझे डराता है कि अगर मैं वह नहीं करता जो मुझे करना चाहिए, तो मैं इसे खो सकता हूँ। यह उन क्षणों में से एक है जिसके बारे में मैंने हमेशा सोचा, आप जानते हैं, अगर कोई वास्तव में कैल्विनिस्ट है, तो वे प्रोत्साहन का एक बड़ा स्रोत हैं क्योंकि अर्मेनियाई सहकर्मी इसे केवल हमें डराने के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं।

खैर, मैं उस विशेष विषय पर ज्यादा विस्तार से बात नहीं करने जा रहा हूँ। यह वास्तव में एक ऐसा विषय है जिस पर आप इस व्याख्यान को सुनने के बाद अपने मित्र से बहस कर सकते हैं। कैल्विनिस्ट क्या कहते हैं, और अर्मेनियाई लोग उद्धार और उद्धार खोने के बारे में क्या कहते हैं? लेकिन पॉल का कहना है कि डर और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करना चाहिए।

यहाँ यूनानी भाषा में व्याकरण उल्लेखनीय है। यह बहुवचन है, एकवचन नहीं। पौलुस व्यक्तियों को अपने उद्धार के लिए काम करने के लिए नहीं बुला रहा है।

वह समुदाय को उस मुक्ति के लिए काम करने के लिए बुला रहा है। और हमें यह समझने या व्याख्या करने में सक्षम होना चाहिए कि उस काम का क्या मतलब है। आपने जो बातें जल्दी से बताईं, उनमें से एक यह है कि हम मोक्ष के काम करने के तरीके के बारे में तर्क करने में खुद से बहुत आगे निकल जाते हैं।

पॉल ने श्लोक 13 में स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया कि यह ईश्वर है जो काम करता है, और ग्रीक शब्द काम करता है एक ऐसा शब्द है जो मुझे बहुत पसंद है। ग्रीक शब्द है एनेजियो। मैं जानता हूँ, मैं आपसे वादा करता हूँ, मैं ग्रीक शब्द का बहुत अधिक उपयोग नहीं करने जा रहा हूँ।

लेकिन मुझे माफ़ करें क्योंकि इस व्याख्यान और अगले व्याख्यान के बीच, मैं कुछ बातों को स्पष्ट करने के लिए एक या दो ग्रीक शब्द बोलूँगा। इसलिए मुझसे नाराज़ न हों। मैं इसे सरल बनाने की कोशिश करने जा रहा हूँ।

मैं एक अच्छा लड़का बनूँगा। यहाँ ग्रीक शब्द एनेजियो है। यह वह शब्द है जिससे कभी-कभी हम यह मान लेते हैं कि अंग्रेजी शब्द एनर्जी इसी से निकला है।

मैं सशक्त बनाने, सुसज्जित करने, सहानुभूतिपूर्ण और प्रेरणा देने के संदर्भ में काम करना चाहता हूँ। पॉल श्लोक 13 में कहता है, वास्तव में, क्योंकि यह परमेश्वर है जो काम करता है, जो ऊर्जा देता है, जो आपको अपनी अच्छी इच्छा के लिए इच्छा और काम करने के लिए सशक्त बनाता है। इसलिए यह जरूरी नहीं है कि अपने स्वयं के उद्धार और कांपते हुए समुदाय के रूप में काम करना इसका मतलब है कि इसे परमेश्वर के बिना करना।

यह सब आप पर निर्भर करता है; चलिए पहले यह स्पष्ट कर लेते हैं। लेकिन फिर भी मैं वह सवाल पूछना बंद नहीं करूँगा जो कॉलेज में मेरी कक्षा में बहुत विवाद का विषय बनता है।

अचानक, मुझे एहसास होने लगा कि कौन अर्मेनियाई धर्म-स्वीकृति पृष्ठभूमि से आता है और कौन कैल्विनिस्ट धर्म-स्वीकृति पृष्ठभूमि से आता है। अपने उद्धार के लिए काम करने का क्या मतलब है? अगर आप इसे काम नहीं करते हैं तो क्या आप अपना उद्धार खो सकते हैं? क्या अपने उद्धार के लिए काम करने से आपको ईश्वर के साथ उद्धार की स्थिति में उच्च स्थान पाने में मदद मिलती है? अपने उद्धार के लिए काम करें। विषय बहुवचन है, जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था।

एक शब्द के रूप में मोक्ष का अर्थ यहाँ कल्याण हो सकता है और सामाजिक अर्थ की भावना रखता है। लेकिन इसका एक सामाजिक अर्थ यह भी हो सकता है कि एक दिन हम सभी कैसे बच जाएँगे। मेरा मतलब है कि हममें से जो लोग मसीह यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि कर्मों से उद्धार मिलता है। कहीं हम भ्रमित न हो जाएं, इसलिए मैं आपको एक महान पुस्तक के बारे में याद दिला दूँ जिसके बारे में मैं आपको बाद में बताऊँगा। यह एक महान पुस्तक है। इफिसियों अध्याय 2, इफिसियों अध्याय 2, श्लोक 8 से 10, कहते हैं क्योंकि अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो।

और यह तुम्हारा अपना काम नहीं है, बल्कि परमेश्वर का दान है। आयत 9 पर ध्यान दें। यह कामों का नतीजा नहीं है, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे। क्योंकि हम मसीह यीशु में उसके बनाए हुए हैं, उन भले कामों के लिए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।

इसलिए, पॉल यहाँ अपने कुछ धार्मिक विश्लेषणों का खंडन नहीं कर रहा है जो हम पाते हैं, चाहे कुरिन्थियों, रोमियों, गलातियों, या इफिसियों में, कि उद्धार मसीह में विश्वास से होता है। यह केवल अनुग्रह है जैसा कि लूथर का मंत्र सोला ग्रैटिया, सोला फ़ाइडे होगा। यह विश्वास है, और यह केवल अनुग्रह से है कि हम बचाए गए हैं।

ऐसा नहीं है कि हम बहुत कुछ कर सकते हैं। हम वास्तव में किसी भी प्रयास या किसी भी राशि से अपना उद्धार खरीद सकते हैं। इसलिए, डर और कांपते हुए अपने उद्धार के लिए काम करना, क्षमा करें, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने के लिए काम करना नहीं है।

ध्यान दें कि यह निर्देश उन लोगों के लिए है जो पहले से ही ईसाई हैं। उन्हें ईसाई बनने के लिए अपने उद्धार के लिए काम करने की ज़रूरत नहीं है। वे पहले से ही ईसाई हैं, उन्हें इस कुटिल दुनिया में चमकने की ज़रूरत है।

यहाँ शब्द, जैसा कि मैं समझता हूँ, पवित्रीकरण में आपसी सहयोग और सुसमाचार के योग्य जीवन जीने की कोशिश करने का भाव रखता है ताकि यह उनके व्यक्तिगत जीवन और व्यक्तिगत कार्य को अब से लेकर अंत तक प्रभावित कर सके जब तक कि मसीह न आ जाए। लेकिन समुदाय के भीतर सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना करने के लिए आपसी सहयोग, चाहे रोमन उपनिवेश में रहने के कारण हो या कुछ झूठे शिक्षकों के आने की प्रवृत्ति के कारण, यदि वे सामूहिक रूप से एक-दूसरे का समर्थन करके, गिरने पर एक-दूसरे को उठाकर, एक-दूसरे को प्रोत्साहित करके और वास्तव में एक-दूसरे को सक्षम बनाकर, किसी न किसी रूप में वे ईसाई बनने में सक्षम हो सकते हैं, जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि वे बनें। और यदि वे भय या डर के साथ नहीं, बल्कि विस्मय की भावना के साथ ऐसा करते हैं, तो भय की कोई भावना नहीं है कि परमेश्वर एक टेढ़ी छड़ी वाले इस दुष्ट दादा की तरह है। ओह, आप गलत काम करने की हिम्मत न करें क्योंकि वह उस टेढ़ी छड़ी से आपके सिर पर लात मार देगा।

नहीं, इस बात का भय कि जिस परमेश्वर से हम जुड़े हैं और जिसे हम अपना पिता कहते हैं, वह एक दयालु और पवित्र परमेश्वर है, यह एक ऐसी स्थिति है जिसे हम संजोते और सम्मान करते हैं। हम उस समुदाय में बने रहना चाहते हैं, और हम अपने जीवन जीने के तरीके में उसका सम्मान करना चाहते हैं। भय की वह भावना, कांपने की वह भावना जो कहती है कि मैं परमेश्वर को निराश नहीं करना चाहता, और मैं मसीह में अपने भाई या बहन को परमेश्वर को निराश नहीं करने देना चाहता।

मैं उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा। मैं यहाँ तक कहूँगा कि अगर हम भय और काँप के साथ अपने उद्धार के लिए काम करना समझें तो यह अधिक समझ में आता है। लेकिन मैं आपको यह भी बता दूँ कि दूसरे लोग क्या कहते हैं क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप वही सुनें जो मैं सोचता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि इस बारे में दूसरों का क्या कहना है। एक विद्वान अभी भी लिखते हैं कि जबकि फिलिप्पियों को अपने उद्धार के लिए काम करना है, उन्हें इसके लिए काम नहीं करना है। वास्तव में, मण्डली का उद्धार का कार्य ईश्वरीय कार्य पर आधारित है और उसके द्वारा सक्षम है।

पॉल का कहना है कि ईश्वर उन्हें प्रेरणा देता है, जिसे ऊर्जा या ऊर्जा देने वाला घटक कहा जाता है, और आज्ञाकारी तरीके से जीने की शक्ति देता है। मेरे एक सहकर्मी, फ्रैंक, जिन्हें मैं वास्तव में सम्मान देता हूँ, इसे इस तरह से समझाते हैं: जब पॉल फिलिप्पियों 2:12 में कहते हैं कि विश्वासियों को अपने उद्धार के लिए काम करना चाहिए, तो उनका मतलब यह नहीं है कि उन्हें अंतिम दिन उद्धार के लिए काम करना चाहिए। इसके बजाय उनका मतलब है कि उन्हें मसीह के सुसमाचार के योग्य तरीके से खुद को संचालित करना चाहिए क्योंकि वे मसीह के दिन ईश्वर के सामने अपने सही खड़े होने की अंतिम पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

और मुझे शायद आपको याद दिलाना चाहिए कि फ्रैंक ज़्यादा कैल्विनिस्ट जड़ों से आते हैं, लेकिन एक बाइबिल अध्ययन विद्वान के रूप में, वह यथासंभव तटस्थ रहने की कोशिश करते हैं। लेकिन मैंने सोचा कि मुझे आपको यह अस्वीकरण दे देना चाहिए। आइए मैं आपको दिखाता हूँ कि बेन विदरिंगटन इस बारे में क्या कहते हैं।

मुझे यहाँ एक और अस्वीकरण देना है। बेन विदरिंगटन ज़्यादातर आर्मिनियन दृष्टिकोण से आते हैं। जिस तरह से वे इसे समझाते हैं, उसमें सूक्ष्म बारीकियों को देखें।

बेन कहते हैं कि पॉल वास्तव में मानते हैं कि धर्म परिवर्तन के बाद ईसाइयों का व्यवहार पवित्रीकरण की वर्तमान प्रक्रिया को प्रभावित करता है और, यदि धर्मत्याग जैसी कोई बड़ी घटना घटती है, तो उनके अंतिम उद्धार को भी प्रभावित करता है। यह एक आर्मिनियन विद्वान है जो एक धार्मिक ढांचे को जोड़ने की कोशिश कर रहा है जो कहता है कि आप अपना उद्धार खो सकते हैं और इस परीक्षण को समझाने की कोशिश कर रहा है जो कहता है कि जिस तरह से समुदाय अपने पवित्रीकरण में एक साथ काम करता है, उसका उनके अंतिम उद्धार पर कुछ प्रभाव हो सकता है। यह मुझे दूसरी अपील पर ले आता है।

याद रखें, पहली अपील आज्ञाकारिता में चमकने की है। दूसरी अपील, जैसा कि हम पद 12 से 18 को देखते हैं, आचरण में चमकने की अपील है। आचरण में चमकने की अपील।

निर्दोष होना। निर्दोष होना। और मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा कि पॉल ने तुरंत कहा था कि निर्दोष होना कोई ऐसी चीज नहीं है जो कहीं से आ जाती है।

वास्तव में, पद 15 से, वह आगे कहेगा, जो मेरे लिए इस अंश में एक बहुत ही महत्वपूर्ण पद है, कि तुम निर्दोष और मासूम हो सकते हो, और वह इसे यहीं नहीं छोड़ेगा। वह वास्तव में यहाँ तक कहेगा कि तुम एक टेढ़ी और विकृत पीढ़ी के बीच में निष्कलंक परमेश्वर के बच्चे हो जिनके बीच तुम दुनिया में रोशनी की तरह चमकते हो। वाह! निर्दोष और निर्दोष बनो।

और इसका एक कारण यह भी है कि आप पवित्र ईश्वर की संतान हैं। इस व्याख्यान श्रृंखला में मैंने आपके साथ जिस रिश्तेदारी की अवधारणा पर चर्चा करने की कोशिश की है, उसके बारे में सोचें। ईश्वर की संतान के रूप में, ऐसे समाज में जहाँ घर का सम्मान इस बात से जुड़ा है कि घर के सदस्य कैसे व्यवहार करते हैं।

पॉल ने उन्हें किनारे कर दिया है। पॉल ने उन्हें मेरा प्रिय कहा है। वह उन्हें मेरे भाई और बहन कहेगा।

यहाँ, वह कहता है कि आप निर्दोष और दोषरहित होना चाहते हैं क्योंकि आप परमेश्वर की संतान हैं। आपकी पहचान एक पवित्र परमेश्वर में निहित है। एक परमेश्वर जो एक महान परमेश्वर है।

एक ईश्वर जो पवित्र ईश्वर है, जिसका समाज में आदर और सम्मान किया जाना चाहिए। और उसका सम्मान इस बात में झलकता है कि आप अपना जीवन कैसे जीते हैं। वैसे, अगर आप उस दुनिया को नहीं समझते जिसमें आप रहते हैं, तो पॉल स्पष्ट करेगा।

यह दुनिया टेढ़ी-मेढ़ी और उलझी हुई है। वह पद 15 में उन्हें चुनौती देते हुए कहता है कि इसी वजह से उन्हें चमकने के लिए प्रेरित किया जाता है। प्रकाश की तरह चमको।

ऐसा नहीं है कि वह कह रहा है कि टॉर्च उठाओ और फिर उस अंधेरे स्थान की ओर इशारा करो। नहीं, पॉल ऐसा नहीं कह रहा है। एक बहुत ही अंधेरे वातावरण की कल्पना करें।

ऐसी दुनिया को दर्शाने की कोशिश कर रही है, जहाँ औसत घर में इस्तेमाल होने वाली रोशनी हमारे आधुनिक समय के रेफ्रिजरेटर की रोशनी के बराबर है। और यह एक ऐसी रोशनी हो सकती है जिसके बगल में कुछ टहनी और थोड़ा तेल हो। और एक बहुत ही घने, अंधेरे वातावरण की कल्पना करें।

और आप उस छोटी सी रोशनी को स्थापित करते हैं। यह टॉर्च की तरह नहीं है, माफ कीजिए, जो बहुत छोटे, संकीर्ण स्थान पर प्रकाश डालती है। लेकिन यह एक प्रकाश है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, जो अपने दायरे में चारों ओर के अंधेरे को दूर करने के लिए प्रकाश डालता है।

फिर पौलुस उनसे अपील करता है। निर्दोष और मासूम बनो और चमको। अपने आचरण से चमको।

इस संसार में ईश्वर को अपने जीवन जीने के तरीके से पहचानें। वाह। वाह।

वाह! जब हम पौलुस के बारे में इन बातों पर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि केवल पहचान ही मायने नहीं रखती, बल्कि निष्ठा भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि दुनिया के अन्य लोग देख रहे हैं कि परमेश्वर की संतानें किस प्रकार व्यवहार करती हैं।

रोमन उपनिवेश में, जो लोग जिज्ञासु सीज़र नहीं कहेंगे, सीज़र प्रभु है, लेकिन जो लोग जिज्ञासु जीसस कहेंगे, जो लोग इस प्रभुता को मसीह को मानते हैं, वे देख रहे हैं कि ये लोग अपना जीवन

कैसे जीते हैं। और दुनिया में ईमानदारी मायने रखती है। यही कारण है कि मैं स्पष्ट कर सकता हूँ कि कभी-कभी ईसाइयों के रूप में हमारे लिए यह कहना बहुत बेकार है कि, ओह, मैं अपना ईसाई जीवन जी रहा हूँ।

यह मेरी निजी जिंदगी है। लोग मुझे परेशान न करें। काफी हद तक यह बात सच है।

लेकिन इस विशेष अंश के संदर्भ में यह महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि हम चर्च में एक दूसरे के रखवाले हैं। और हम विश्वास के समुदाय के रूप में कैसे रहते हैं, यह दुनिया को बताता है, चाहे सकारात्मक रूप से हो या नकारात्मक रूप से। पॉल, सकारात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहते हैं, चमको।

प्रकाश को बाहर फेंको। जो प्रकाश तुम लाते हो, जो नैतिक अखंडता तुम लाते हो, उसे अंधकार पर विजय पाने के लिए पर्याप्त चमकने दो। बिजली के बिना एक अफ्रीकी गाँव में पले-बढ़े होने के कारण, मैं जानता हूँ कि अंधकार क्या होता है।

और यह आश्चर्यजनक है, संयुक्त राज्य अमेरिका में हम चाँद की रोशनी देखते हैं, और हम कहते हैं, ओह, अद्भुत चाँद। और हम चाँद से मिलने वाली रोशनी की कितनी कम सराहना करते हैं। मेरे गाँव में, पूर्णिमा सबसे अच्छी बिजली की तरह होती है।

स्थान जितना अधिक अंधेरा होगा, प्रकाश उतना ही अधिक चमकीला होगा, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो। पौलुस फिलिप्पी के मसीहियों को चुनौती देता है, जैसा कि शायद वह आपको और मुझे चुनौती दे रहा है, जो प्रभु यीशु मसीह को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मानते हैं, आचरण में चमकने के लिए, निर्दोष और मासूम होने के लिए। एक कुटिल दुनिया में, हम दुनिया को प्रभावित करने के लिए नहीं जीते हैं, बल्कि हम दुनिया के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करने के लिए जीते हैं।

और पॉल, अपनी गैर-समझौतावादी स्थिति में, कहेगा कि वह उम्मीद कर रहा है। खैर, वह पहले से ही उन पर विजय प्राप्त कर रहा है। वह वास्तव में कह रहा है, मैं आपसे इस तरह जीने की उम्मीद करता हूँ, और मैं वास्तव में मसीह के दिन आपके जीवन जीने के तरीके के लिए कुछ मुकुट प्राप्त करने की उम्मीद कर रहा हूँ।

दूसरे शब्दों में, आज हम जिस तरह से अपना जीवन जीते हैं, उससे परमेश्वर की महिमा होती है और इसका अंतिम समय में होने वाला प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में, पौलुस के लिए, यह वास्तव में मसीह के दिन ही है जो अच्छी खबर होगी। लेकिन यह हमें यह भी याद दिलाता है कि हम जो जीवन यहाँ जीते हैं, वह सबका अंत नहीं है।

आगे कुछ और भी है। पद 16 में, वह आगे कहता है, और मैं जीवन के वचन को दृढ़ता से थामे हुए पढ़ता हूँ, ताकि मसीह के दिन मैं गर्व कर सकूँ कि मैंने व्यर्थ में दौड़ना या व्यर्थ में परिश्रम नहीं किया। कुछ अनुवादों में, आगे बढ़ते रहना, का अनुवाद दृढ़ता से थामे रहना के रूप में किया गया है।

दृढ़ता से पकड़े रहना या दृढ़ता से पकड़े रहना यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि पौलुस परमेश्वर के वचन, सुसमाचार, को दृढ़ और मजबूत रखने की अपेक्षा कर रहा है। और इसे समझा जा सकता है। आप कह सकते हैं कि यह दृढ़ता से पकड़े रहना और उसमें दृढ़ रहना है या सुसमाचारवादी दृष्टिकोण रखने के संदर्भ में आगे बढ़ना है कि हम बाहर जा रहे हैं, और हम दुनिया तक पहुँचने जा रहे हैं।

किसी भी तरह से, हाँ, कुछ टिप्पणीकार इस अंतर को बनाना पसंद करते हैं। लेकिन मैं उन लोगों में से एक हूँ जो कहते हैं, आप जानते हैं कि, सुसमाचार और मिशन घटक वैसे भी हैं। इसलिए, मैं अपना जीवन कैसे जीता हूँ, यह मेरे पड़ोसी को मसीह के पास ला सकता है।

और मैं अपने पड़ोसी तक भी सुसमाचार ले जा सकता हूँ। क्या आप उस अभिव्यक्ति को जानते हैं, मुझे नहीं पता कि इसका स्रोत क्या है, जो हर तरह से सुसमाचार का प्रचार करता है और यदि आवश्यक हो, तो शब्दों के द्वारा? यदि आप अपना जीवन मसीह के योग्य तरीके से जीते हैं, तो चमकते हुए, आप दुनिया को मसीह दिखा रहे हैं।

वैसे, इसीलिए आप कुछ अनुवादों में दृढ़ता से पकड़े रहना और दृढ़ता से पकड़े रहना देखेंगे। मैं आपको सिर्फ यह सुझाव देना चाहता हूँ कि अगर आप आउटरीच में रुचि नहीं रखते हैं, अगर आप सुसमाचार प्रचार में रुचि नहीं रखते हैं, तो आप कहें, ओह, मैं दृढ़ता से पकड़े रहना चुनूँगा क्योंकि यह मेरे लिए कारगर है। मैं बस आपसे आग्रह करने की कोशिश कर रहा हूँ कि दोनों में सुसमाचार प्रचार और मिशनरी घटक हैं।

कुटिल दुनिया में चमकना एक मिशनरी गतिविधि है, और हम इसे गंभीरता से लेना चाहते हैं। यह मुझे मेरी अगली अपील, अनुकरण की अपील पर ले आता है। मेरे पास एक बार एक पोस्टर था।

मुझे नहीं पता कि यह स्टैन्डर्ड पब्लिशिंग हाउस से आया है या कहीं और से। और मुझे इस खास पोस्टर के बारे में कुछ दिलचस्प लगा। पोस्टर में यह छवि थी जिसे मैं यहाँ डालने की कोशिश कर रहा हूँ, एक बूढ़ा आदमी और एक जवान आदमी।

और उस विशेष पोस्टर में, वृद्ध व्यक्ति ने युवा व्यक्ति का हाथ पकड़ रखा है। और फिर नीचे यह शिलालेख लिखा है। चाहे आपको पता हो या नहीं, कोई आपका पीछा कर रहा है।

एक अच्छा नेता बनो। मैं आपको बता सकता हूँ कि मैं एक युवा नेता था। मैं एक युवा उपदेशक था।

मैं अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मैंने कई गलतियाँ कीं। मैंने हमेशा प्रार्थना करने और कड़ी मेहनत करने की कोशिश की ताकि मैं सबसे अच्छा नेता बन सकूँ। मुझे यह विशेष पोस्टर क्यों देखना चाहिए? मेरा मतलब है, यह पोस्टर मुझसे और भी चीज़ें माँग रहा है क्योंकि मैं यूथ फ़ॉर क्राइस्ट में एक निर्देशक के रूप में जिन लोगों का नेतृत्व कर रहा था, उनमें से अधिकांश की उम्र के लगभग बराबर था।

वाह! लेकिन मुद्दा यह है कि, चाहे आप इसे जानते हों या नहीं, कोई आपका अनुसरण कर रहा है। पौलुस अनुकरण करके चमकने की अपील करता है—श्लोक 17।

चाहे मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान पर एक अर्घ के रूप में उंडेला जाऊँ, फिर भी मुझे खुशी है कि तुम आनन्दित हो। इसी तरह, तुम्हें भी आनन्दित और आनंदित होना चाहिए। पौलुस जो कर रहा है, उसे देखो और उसे अपने दृष्टिकोण में प्रतिबिंबित करो।

जेल में बंद आदमी वही है; अगर आपको याद हो, फिलिप्पियों पर व्याख्यान की शुरुआत में, मैंने कहा था, आनंद मनाओ, खुशी मनाओ। यह जेल में बंद आदमी है। जब आप जेल में होते हैं तो आपके गाने का विषय यह नहीं होता।

मैं कहता हूँ कि मुझसे सीखो ताकि तुम भी ऐसा कर सको। अनुकरण के लिए पॉल की कहानी यहीं समाप्त नहीं होने वाली है क्योंकि वह वास्तव में यह निर्धारित करना शुरू कर देगा कि कैसे विशिष्ट लोगों को, जिसमें वह भी शामिल है, इस चर्च के लिए अच्छे उदाहरण बनना चाहिए। लेकिन यह सिर्फ एक योजना है।

मैं आपका ध्यान श्लोक 14 की एक विशेष पंक्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। जब बाइबल कहती है, सब कुछ बिना किसी शिकायत और विवाद के करो, अगर आप फिलिप्पियों पर कोई टिप्पणी उठाएँगे, तो आप देखेंगे कि ज़्यादातर मामलों में तीन से पाँच पन्ने इस विशेष अंश पर चर्चा करने के लिए समर्पित हैं। और कुछ लोग कहते हैं, ओह, यह पुराने नियम के अंशों का एक संकेत है।

मैं आपको कुछ ही देर में ये अंश दिखाऊंगा। और वे कहेंगे, आइए इसका उत्तर जानने का प्रयास करें कि यह जॉन के इन सभी अंशों से किस प्रकार संबंधित है। लेकिन मैं इतना खारिज नहीं करना चाहता।

इसलिए, मैं आपको ये अंश दिखाना चाहता हूँ। जब वे माराह पहुँचे, तो वे माराह का पानी नहीं पी सके क्योंकि वह कड़वा था—निर्गमन 15:23, 25 से पढ़ें।

इसलिए उसका नाम मारा रखा गया। और लोग मूसा के विरुद्ध बड़बड़ाने लगे, और कहने लगे, हम क्या पीएँ? उसने यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसे एक लट्ठा दिखाया। उसने उसे जल में डाला, और जल मीठा हो गया।

यहाँ मुख्य बात यह है कि टिप्पणीकार लोगों की बड़बड़ाहट में बहुत रुचि रखते हैं क्योंकि श्लोक 14 बड़बड़ाने के बारे में बात करता है। और इसलिए, वे बहुत जल्दी यह कहना चाहते हैं कि बड़बड़ाना या विवाद करना पुराने नियम का हिस्सा है। आइए वहाँ कुछ संबंध बनाते हैं।

आप इस संबंध को निर्गमन 16, श्लोक 2 से भी देख सकते हैं। जहाँ हम यह पाठ पाते हैं, और इस्राएल के लोगों की पूरी मण्डली जंगल में मूसा और हारून के विरुद्ध बड़बड़ाने लगी। फिर भी, यह समझा जाता है कि यह एक संकेत है। कुछ लोग तर्क देंगे कि निर्गमन 16, श्लोक 7-9 में और भी मजबूत संकेत मिलता है।

और सुबह तुम यहोवा की महिमा देखोगे, क्योंकि उसने तुम्हारा यहोवा के विरुद्ध बड़बड़ाना सुना है। हम क्या हैं कि तुम हमारे विरुद्ध बड़बड़ाते हो? और मूसा ने कहा कि जब यहोवा तुम्हें शाम को खाने के लिए मांस और सुबह को भरपूर रोटी देगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हारा बड़बड़ाना सुना है कि तुम उसके विरुद्ध बड़बड़ाते हो। हम क्या हैं? तुम्हारा बड़बड़ाना हमारे विरुद्ध नहीं, बल्कि यहोवा के विरुद्ध है।

फिर मूसा ने हारून से कहा, इस्राएल के लोगों की पूरी मंडली से कहो, यहोवा के सामने आओ, क्योंकि उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुना है। इसलिए तुम बड़बड़ाना होते हुए देख सकते हो। तो, यह बिलकुल सच्चा संबंध है।

यह नए नियम में बड़बड़ाने का संदर्भ है, जैसा कि हम यूहन्ना के अध्याय 6 में पाते हैं। इसलिए, यहूदियों ने उसके खिलाफ बड़बड़ाया क्योंकि उसने कहा, मैं वह रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। बड़बड़ाया। मुझे बड़बड़ाना शब्द पसंद है।

मुझे लगता है कि अमेरिकियों को बड़बड़ाना शब्द ज़्यादा पसंद है। आप जानते हैं, मैंने इंग्लैंड में काफ़ी समय बिताया है, और इस मामले को देखने के अंग्रेज़ी तरीक़े की एक दिलचस्प बात यह है कि कभी-कभी वे शोक शब्द का इस्तेमाल करते हैं। शोक सिर्फ़ सुनने में ही निराशाजनक लगता है।

आप जानते हैं, यह शोक है। मेरा मतलब है, यह शिकायत है। नहीं, यह शिकायत नहीं है।

यह शोक है। और इसलिए, मान लीजिए, आप जानते हैं, आप संबंध बना सकते हैं। आप इस विषय को देख सकते हैं कि लोग कैसे बड़बड़ाते हैं और यह कैसे इस्राएल के लोगों के साथ मुक्ति के इतिहास में दोहराया जाता है।

और फिर, जब आप 1 कुरिन्थियों 10:10 पर आते हैं, तो आप देख सकते हैं कि इसमें बड़बड़ाहट की भाषा दिखाई देती है। और इसलिए, वे यह कहते हुए संबंध बनाते हैं कि यह पॉल के लिए यहाँ मामले को मजबूत करने और बड़बड़ाने के बजाय आज्ञाकारिता का आह्वान करने और परमेश्वर जो कर रहा है उसके प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता का आह्वान करने और शिकायत करना और विवाद करना बंद करने का संकेत हो सकता है। हालाँकि मैंने यह सवाल पूछा है कि क्या गैर-यहूदी पाठक, जहाँ तक हम जानते हैं, फिलिप्पी में इतनी बड़ी यहूदी आबादी नहीं थी कि उनके पास एक आराधनालय भी हो।

क्या वे यह जानते होंगे? या यह महज संयोग है? या फिर पॉल की यहूदी पृष्ठभूमि उसे यह संबंध बनाने में मदद कर रही है? यह निर्णय आप खुद लें। लेकिन मुद्दा यह था कि परमेश्वर ने हमेशा हस्तक्षेप किया था। जब लोग शिकायत करते हैं तो परमेश्वर हमेशा उन्हें संबोधित करने और चीजों को सीधा करने के लिए आगे आता था।

यह भी दिलचस्प है कि जब मैं आपको यह अंश दिखाता हूँ, तो मेरे मन में एक बात आती है कि चाहे वह पुराना नियम हो या नया नियम, ऐसा लगता है कि परमेश्वर के लोगों के समुदाय में, लोगों

को बड़बड़ाना पसंद है। क्या आपको बड़बड़ाना पसंद है? बस अपने सामने एक कागज़ पर लिखिए कि आपको किस बारे में बड़बड़ाना पसंद है। और आइए हम यह महसूस करना शुरू करें कि हमें अपील करने की चुनौती दी जा रही है, और पौलुस हमसे आज्ञाकारिता में चमकने, आचरण में चमकने और अनुकरण में चमकने की अपील करता है।

और फिर अब, इस व्याख्यान के अंत में, मैं आपको दिखाऊंगा कि कैसे वह दो लोगों का चयन करता है, लेकिन मैं एक पर ध्यान केंद्रित करूंगा, और मैं हमारे अगले व्याख्यान में दूसरे व्यक्ति से शुरू करूंगा, जो आज्ञाकारिता के उस मार्ग से गुजरा है, प्रकाश की तरह चमक रहा है। वह तीमुथियुस और इपफ्रदीतुस के उदाहरण दिखाता है। बड़ा नाम, मुंहफट उच्चारण, इपफ्रदीतुस।

पौलुस इस अवसर का उपयोग इन परिचित उदाहरणों को प्रस्तुत करने के लिए करता है, जो लोग कलीसिया से जो माँग रहे हैं, उससे गुज़रे हैं। वह संपर्क के लिए अपनी मंशा व्यक्त करता है, तीमुथियुस को उनके पास वापस जाने के लिए कहता है। वह इच्छा व्यक्त करता है और बताता है कि इपफ्रदीतुस के आने का उनके लिए क्या मतलब है, इपफ्रदीतुस ने उनके लिए क्या किया है, और वह, पौलुस की खुद की इस मण्डली से जुड़ने की क्या इच्छा है।

हमेशा की तरह, पॉल अपने असली गुण दिखाएगा। मुझे यह पसंद है। मैं अपने छात्रों को बताना चाहूँगा कि चाहे मैं संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप या अफ्रीका में रहूँ, हमें पॉल से सीखना चाहिए।

मेरे साथ काम करने वाले लोगों में असाधारण गुण हैं। आइए उन गुणों को देखें। जब सबसे ज़्यादा ज़रूरी हो, तो दूसरों को बताएँ और उन्हें बताएँ कि हमने उनमें ये बेहतरीन गुण देखे हैं।

और पॉल ऐसा ही करने जा रहा है। उदाहरण के तौर पर तीमुथियुस के बारे में बात करते हुए, वह कहता है, तीमुथियुस, तुम तीमुथियुस के बारे में कुछ जानना चाहते हो। पॉल के साथ एक जैसी सोच रखने के लिए तीमुथियुस की सराहना की जाती है।

वह एक जैसा विचार रखता है। वह वह व्यक्ति नहीं है जिसके बारे में पॉल कहता है, चलो यह करते हैं। वह कहता है, ओह, मेरे पास इसके खिलाफ कुछ है।

ओह, इस पर मेरा एक विपरीत दृष्टिकोण है। वास्तव में, शब्द, ग्रीक शब्द जिसका उपयोग वहाँ किया जाता है, कभी-कभी समस्याग्रस्त होता है क्योंकि शब्द का शाब्दिक अनुवाद आत्मा साथी के रूप में किया जा सकता है। और जैसा कि मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा जब हम फिलेमोन पर चर्चा करते हैं, आप जानते हैं, यदि आप उस व्याख्यान को देखते हैं, तो मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि कैसे कुछ विद्वान कहते हैं, ओह, वास्तव में, पॉल वहाँ कुछ समलैंगिक गतिविधि कर रहा है।

कृपया, इस विशेष शब्द का अनुवाद सोलमेट के रूप में किया जा सकता है, इसे पॉल द्वारा टिमोथी के साथ समलैंगिक संबंध के बारे में बात करने के रूप में गलत तरीके से नहीं पढ़ा जाना चाहिए। यह अच्छा है कि अभी तक कोई भी विद्वान इस दिशा में कुछ भी कहने के लिए साहसपूर्वक सामने नहीं आया है, लेकिन मैं इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करने वाले सभी लोगों को सावधान करना चाहता हूँ। यहाँ मुद्दा यह नहीं है।

एक जैसी सोच रखने का मतलब है एक दूसरे से घनिष्ठ भावनात्मक जुड़ाव और ऐसी मानसिकता होना जो आपको साथ मिलकर काम करने और काम करने के लिए सहमत करे। पॉल के लिए टिमोथी ऐसा ही था। अच्छी बात यह है कि पॉल चर्च को यह बताना चाहता था कि टिमोथी में टीम भावना है।

वह सच्ची चिंता प्रदर्शित करता है। वास्तव में, यहाँ चिंता का अनुवाद चिंता है। अब मारिम, वह शब्द जिसे हम नए नियम में अक्सर चिंता, पादरी चिंता के रूप में अनुवाद करते हैं।

वह चर्च के लिए वास्तव में चिंतित रहा है क्योंकि वह उन लोगों में से एक है जो खुद से ज़्यादा दूसरों के बारे में सोचते हैं। क्या आपको फिलिप्पियों अध्याय 2, आयत 4 याद है? खुद से ज़्यादा दूसरों के हितों के बारे में सोचें। तीमुथियुस ने उस उदाहरण को जीया है।

और तीसरा, पॉल कहते हैं, वह एक बेटे की तरह है। वास्तव में, उसने मेरी सेवा वैसे ही की जैसे वह अपने पिता की करता, और मुझे उसके बारे में एक बेटे की तरह बात करने में गर्व महसूस होता है। फिर से रिश्तेदारी।

पॉल एक परिचित अवधारणा पेश करते हुए कह रहे हैं, और मैं बस आपको बताना चाहता हूँ, यह ऐसा बेटा है अगर वह यहाँ मेरे साथ होता और हम सब एक सभा के सामने होते, तो मैं उसकी पीठ थपथपाना चाहता और आप लोगों से कहना चाहता कि देखो, यह मेरा बेटा है। मुझे उस पर गर्व है। और मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मुझे उस पर गर्व है।

आखिरी बार कब आपने किसी ऐसे व्यक्ति की सराहना की थी जिसके साथ आपने काम किया था और उसके सच्चे गुणों को देखा था? खास तौर पर परमेश्वर के साथ उनके काम के संबंध में। पौलुस ने यह दिखाने के लिए समय निकाला कि तीमुथियुस फिलिप्पी की कलीसिया के लिए एक अच्छा उदाहरण है। उन्हें उससे सीखना चाहिए।

उसने साबित कर दिया है, वास्तव में, शब्द, ग्रीक शब्द का अनुवाद है, कि यहाँ चरित्र का अर्थ यह है कि उसके ईसाई जीवन का परीक्षण किया गया है और यह शुद्ध साबित हुआ है। वह समय की कसौटी पर खरा उतरा है, स्थिर रहा है, और एक ईसाई के रूप में अपनी ईमानदारी बनाए रखी है। यही वह गुण है जो आपको तीमुथियुस के बारे में जानना चाहिए।

पांचवां, पॉल उसे फिलिप्पी भेजना चाहता है ताकि वे उसमें एक आदर्श पा सकें। वाह, मुझे यह पसंद है। मैं जानता हूँ, या शायद मुझे कहना चाहिए, मुझे नहीं पता कि कितने लोग बैठकर कहेंगे, मैं खुश नहीं होऊंगा अगर कोई बस खड़ा हो जाए या मेरा बॉस बस कलम और कागज उठा ले या अपने कंप्यूटर पर बैठ जाए या आईपैड उठा ले।

यही बात आती है कि मैं अपने बेहतरीन गुणों की एक सूची लिखूँ ताकि दूसरों को बता सकूँ कि कंपनी में मैं कितना अच्छा उदाहरण रहा हूँ और इसका अनुकरण किया जाना चाहिए। तीमुथियुस के गुणों के बारे में पॉल के सटीक शब्दों को पढ़ें। मैं 19 से 24 तक पढ़ता हूँ।

पौलुस ने इसे इस प्रकार समझाया है। मुझे प्रभु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को शीघ्र ही तुम्हारे पास भेजूंगा, ताकि मैं भी तुम्हारे समाचार से प्रसन्न हो जाऊं। क्योंकि मेरे पास उसके समान कोई नहीं है जो तुम्हारे कल्याण के लिए सच्चे मन से चिन्तित हो।

क्योंकि वे सभी अपना हित चाहते हैं, यीशु मसीह का नहीं। तीमुथियुस अपवाद है। लेकिन आप तीमुथियुस की सिद्ध योग्यता जानते हैं।

कैसे, एक बेटे की तरह पिता के साथ, उसने सुसमाचार में मुझसे यह कहा है। इसलिए, मुझे आशा है कि जैसे ही मैं देखूंगा कि मेरे साथ क्या होगा, मैं उसे तुरंत भेजूंगा। और मुझे प्रभु पर भरोसा है कि मैं भी जल्द ही आऊंगा।

वाह। एक विद्वान इस जटिल शब्द को इस तरह से समझाने की कोशिश करता है। मैं आपके दिमाग को ताज़ा करना चाहूंगा क्योंकि हम पौलुस और तीमुथियुस के रिश्ते के बारे में इस विशेष व्याख्यान के अंत में पहुँच चुके हैं।

पॉल कहते हैं कि वह तीमुथियुस के साथ समान विचारधारा वाले लोगों के लिए यूनानी शब्द है। यह शब्द समानता और चरित्र की एकरूपता से जुड़े रिश्ते को दर्शाता है। पॉल और तीमुथियुस ने फिलिप्पियों के लिए एक ही गहरा प्यार और चिंता साझा की।

शायद इसलिए क्योंकि तीमुथियुस का उनके धर्म परिवर्तन से कुछ लेना-देना है। लेकिन मैं आपको, आप जानते हैं, तीमुथियुस के साथ पॉल के रिश्ते के बारे में भ्रमित नहीं करना चाहता। पॉल ये सारी बातें तीमुथियुस से नहीं कह रहा है; यह सिर्फ चापलूसी है।

वह तीमुथियुस को जानता है। और मैं आपको याद दिला दूँ कि अन्यत्र, हम पाते हैं कि पौलुस तीमुथियुस नामक इस व्यक्ति के बारे में बात कर रहा है। हम प्रेरितों के काम 16, आयत 1 और 2 से जानते हैं कि पौलुस वास्तव में लुस्त्रा में इस व्यक्ति के संपर्क में आया था।

वह एक अच्छा और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। हम उसी प्रेरितों के काम 16 में यह भी जानते हैं कि तीमुथियुस आधा यहूदी और आधा गैर-यहूदी था, और वास्तव में, पौलुस ने उसका खतना किया था। वह परमेश्वर के साथ अपने काम के प्रति इतना समर्पित था कि पौलुस को यकीन नहीं था कि तीमुथियुस यहूदी धर्म के लोगों के दबाव से कैसे निपटेगा, जो हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि एक अच्छा मसीही बनने के लिए खतना होना ज़रूरी है।

इसलिए, पौलुस ने उसका खतना किया। तीमुथियुस पर एक अन्य चर्चा में, छात्रों ने पूछा है कि वह आधा यहूदी क्यों है और उसका खतना क्यों नहीं हुआ। खैर, यह उसके पिता का मामला है। अगर उसका पिता यूनानी था, तो पिता ही तय करेगा कि ये चीजें कैसे होती हैं।

एक बात जो हम निश्चित रूप से जानते हैं वह यह है कि पौलुस ने उसका खतना किया था। 2 तीमुथियुस में, हमें 2 तीमुथियुस 1 आयत 5 में याद दिलाया गया है कि उसकी माँ, यूनीके और उसकी दादी, लुईस, बहुत ही ईश्वर-भक्त लोग थीं। वास्तव में, उन्होंने एक ऐसी परंपरा को आगे बढ़ाया जिसे पौलुस ने सराहनीय पाया।

दूसरे शब्दों में, तीमुथियुस का पालन-पोषण ईश्वरीय पालन-पोषण था। वह लुस्त्रा में एक अच्छे व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। जब पौलुस ने उसे देखा, तो उसे कोई ऐसा व्यक्ति मिला जिसके साथ वह संगति कर सकता था।

हम जानते हैं कि कई मामलों में, पौलुस ने तीमुथियुस के साथ यात्रा की। पौलुस के कई पत्रों में, उसने खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में पेश किया जो तीमुथियुस के साथ लिख रहा था। कहने का तात्पर्य यह है कि फिलिप्पियों में पौलुस ने तीमुथियुस के बारे में जो कुछ कहा, वह ऐसा नहीं है कि पौलुस कहीं किसी तरह की चापलूसी वाली भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

वह पूरी ईमानदारी से कह रहा है कि वह इस आदमी को जानता है। वह एक ईमानदार आदमी है। वह ऐसा व्यक्ति है जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं।

वह वास्तव में लोगों की परवाह करता है। वास्तव में, वह चर्च के लिए अनुसरण करने के लिए एक अच्छा उदाहरण है। अब तक, इस विशेष व्याख्यान में हम जो चर्चा करेंगे, उसके बारे में सोचते हुए, फिलिप्पियों अध्याय 2 की शुरुआत इस बात से होती है कि अगर चर्च में कोई सांत्वना और सांत्वना, कोई प्रोत्साहन और एकता की मजबूत भावना है, तो उसे बनाया जाना चाहिए।

और फिर उसने कहा, पद 4, मसीह का मन अपने में रखो और मसीह की मानसिकता को दिखाओ जो उसे आज्ञाकारिता के कठिन मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगी और कैसे, परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उसे ऊंचा किया और उसे एक ऐसा नाम दिया जो हर दूसरे नाम से ऊपर है। इसके आधार पर पौलुस कलीसिया को भी आज्ञाकारिता में चलने की चुनौती देता है और उनसे चमकने की अपील करता है। उसने उनसे आज्ञाकारिता में चमकने की अपील की।

उन्होंने उनसे आचरण में चमकने की अपील की। उन्होंने उनसे अनुकरण करके चमकने की अपील की। फिर उन्होंने आज्ञाकारिता का एक उदाहरण दिखाया।

तीमुथियुस। तीमुथियुस आज्ञाकारिता का एक बहुत अच्छा उदाहरण है। वह जो कह रहा है, वह यह है कि मसीह के साथ चलना एक अमूर्त अवधारणा नहीं है।

वास्तव में, ईसाइयों को दुनिया में कैसे चमकना चाहिए, इस बारे में वह जो निर्देश दे रहा है, वह सब संभव है। उसे पहले एक व्यक्ति को दिखाना है कि यह किसने किया है। अध्याय 2 के समाप्त होने से पहले उसे एक दूसरे व्यक्ति को भी दिखाना है, और उस व्यक्ति ने भी यह किया है।

और इससे पहले कि आप इस विशेष व्याख्यान को समाप्त करें, मैं आपको थोड़ा सोचने पर मजबूर कर दूँ। पॉल चर्च को बताने जा रहा है कि तीमुथियुस एक बहुत अच्छा उदाहरण है और दूसरा व्यक्ति, इपफ्रदीतुस भी एक बहुत अच्छा उदाहरण है। और इसलिए, जब हम वापस आएंगे, तो मैं वास्तव में आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करूँगा कि पॉल के लिए, वह इपफ्रदीतुस नामक एक अच्छा उदाहरण दिखाएगा।

वह व्यक्ति जिसने पॉल के साथ काम किया। वह व्यक्ति जिसने वास्तव में स्पष्ट, सच्चे चरित्र का प्रदर्शन किया, इस हद तक कि वह मसीह की आज्ञाकारिता के मार्ग पर दूसरों के लिए अपना जीवन जोखिम में डालने के लिए तैयार था। और वह व्यक्ति जिसने वास्तव में चाहा कि जब वह फिलिप्पी लौटे, तो वे उसे इन व्यापक बाहों के साथ स्वागत करें।

मुझे नहीं पता कि क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसके बारे में आप कह सकें कि वह वास्तव में इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि ईसाइयों को अपना जीवन कैसे जीना चाहिए। लेकिन मैं यहाँ मुख्य मुद्दे से दूर नहीं जाना चाहता। हमें चमकने के लिए, हमें आज्ञाकारिता में चमकना चाहिए।

अगर आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो आज्ञाकारिता का एक अच्छा उदाहरण है और आप उसका अनुकरण करना चाहते हैं, तो यह ठीक है। लेकिन अगर ऐसा नहीं है, तो मसीह स्वयं एक अच्छा उदाहरण है। हम आज्ञाकारिता के उस मार्ग पर चल सकते हैं।

इस विशेष व्याख्यान को समाप्त करते हुए, मैं आपको एक भजन की एक विशेष पंक्ति याद दिलाना चाहता हूँ जिसे आपने शायद गाया होगा लेकिन आज्ञाकारिता की समृद्धि के बारे में नहीं सिखाया होगा। और पहला छंद इस प्रकार है। भरोसा करो और आज्ञा मानो।

क्योंकि यीशु में खुश रहने का कोई और तरीका नहीं है, सिवाय भरोसा करने और आज्ञा मानने के। हमें मसीह के शरीर में एकता में रहना चाहिए। हमें खुशी, शांति और अनुग्रह से भरा जीवन जीना चाहिए।

यीशु में खुश रहने का कोई और तरीका नहीं है। बस भरोसा करना और आज्ञा मानना है। इस बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में हमारे साथ अपने निरंतर अध्ययन के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मुझे उम्मीद है कि आप इसका आनंद ले रहे होंगे और मुझे उम्मीद है कि आप प्रेरित पौलुस से बहुत सारी सामग्री प्राप्त कर रहे होंगे। कृपया हमारे साथ सीखते और बढ़ते रहें। और मैं बस यही उम्मीद और प्रार्थना करता हूँ कि हम सब मिलकर अपने जीवन जीने के तरीके से परमेश्वर की महिमा करेंगे।

धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 13 है, अपील टू शाइन, फिलिप्पियों 2:12-30।